Prof. (Dr.) Sanjay Kumar
Department of Psychology
Maharaja College, Ara

मानसिक विकारों की प्रकृति (Nature of Psychopathology)

मानसिक विकारों की प्रकृति एक जटिल और बहुस्तरीय विषय है, जिसमें कई कारक शामिल होते हैं। यहाँ कुछ मुख्य बिंदु दिए गए हैं जो मानसिक विकारों की प्रकृति को समझने में मदद करते हैं:

1. जैविक कारक: मानसिक विकारों में जैविक कारकों की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मस्तिष्क की रसायनिक प्रक्रियाओं में असंतुलन, आनुवंशिक कारक, और मस्तिष्क की संरचनात्मक समस्याएं मानसिक विकारों के विकास में योगदान कर सकती हैं।

2. मानसिक कारक: मानसिक विकारों में मानसिक कारकों की भी एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। तनाव, चिंता, अवसाद, और अन्य मानसिक समस्याएं मानसिक विकारों के विकास में योगदान कर सकती हैं।

3. पर्यावरणीय कारक: पर्यावरणीय कारक भी मानसिक विकारों के विकास में योगदान कर सकते हैं। पारिवारिक और सामाजिक दबाव, शिक्षा और आर्थिक समस्याएं मानसिक विकारों के विकास में योगदान कर सकती हैं।

4. व्यक्तिगत कारक: व्यक्तिगत कारक भी मानसिक विकारों के विकास में योगदान कर सकते हैं। व्यक्ति की व्यक्तित्व, मानसिक स्वास्थ्य, और जीवनशैली मानसिक विकारों के विकास में योगदान कर सकती हैं।

5. अन्य कारक: अन्य कारक जैसे कि आनुवंशिक, पोषण संबंधी और नींद संबंधी समस्याएं भी मानसिक विकारों के विकास में योगदान कर सकती हैं।

इन सभी कारकों के संयोजन से मानसिक विकारों की प्रकृति को समझने में मदद मिलती है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि मानसिक विकार एक जटिल समस्या है जिसमें कई कारक शामिल होते हैं, और इसके उपचार में एक समग्र दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

मानसिक विकारों की प्रकृति को समझने से हमें निम्नलिखित लाभ हो सकते हैं:

1. उपचार में सुधार: मानसिक विकारों की प्रकृति को समझने से हमें उनके उपचार में सुधार करने में मदद मिलती है।

2. रोकथाम में सुधार: मानसिक विकारों की प्रकृति को समझने से हमें उनकी रोकथाम में सुधार करने में मदद मिलती है।

3. जागरूकता में वृद्धि: मानसिक विकारों की प्रकृति को समझने से हमें उनके बारे में जागरूकता में वृद्धि करने में मदद मिलती है।

4. सामाजिक समर्थन में वृद्धि: मानसिक विकारों की प्रकृति को समझने से हमें उनके लिए सामाजिक समर्थन में वृद्धि करने में मदद मिलती है।

Edit with WPS Office

मानसिक विकारों के अध्ययन का एक लंबा और जटिल इतिहास है, जिसमें कई महत्वपूर्ण घटनाएं और विकास शामिल हैं। यहाँ मानसिक विकारों के अध्ययन के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और डीएसएम (DSM) प्रणाली के विकास का एक संक्षिप्त विवरण दिया गया है:

प्राचीन काल

- प्राचीन ग्रीस में, हिप्पोक्रेट्स और उनके अनुयायियों ने मानसिक विकारों के बारे में लिखा।

- प्राचीन रोम में, गैलेन ने मानसिक विकारों के बारे में लिखा और उनके लिए उपचार के तरीकों का विकास किया।

मध्य युग

- मध्य युग में, मानसिक विकारों को अक्सर शैतानी कब्जे या पाप के रूप में देखा जाता था।

- 13वीं शताब्दी में, अरस्तू के कार्यों का पुनरुद्धार हुआ, जिसमें मानसिक विकारों के बारे में चर्चा की गई थी।

आधुनिक युग

- 18वीं शताब्दी में, फ्रांसीसी चिकित्सक फिलिप पिनेल ने मानसिक विकारों के बारे में लिखा और उनके लिए उपचार के तरीकों का विकास किया।

- 19वीं शताब्दी में, जर्मन चिकित्सक एमिल क्रेपेलिन ने मानसिक विकारों के वर्गीकरण की एक प्रणाली विकसित की, जिसे बाद में डीएसएम प्रणाली में विकसित किया गया।

डीएसएम प्रणाली

डीएसएम प्रणाली मानसिक विकारों के वर्गीकरण के लिए एक व्यापक और विस्तृत प्रणाली प्रदान करती है, जो चिकित्सकों और शोधकर्ताओं को मानसिक विकारों के बारे में अधिक सटीक और संगठित जानकारी प्रदान करने में मदद करती है।

डीएसएम (DSM) मानसिक वर्गीकरण प्रणाली में मानसिक विकारों को कई श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है। यहाँ डीएसएम मानसिक वर्गीकरण के कुछ प्रमुख प्रकार दिए गए हैं:

- 1952 में, अमेरिकन साइकिएट्रिक एसोसिएशन (एपीए) ने मानसिक विकारों के वर्गीकरण के लिए डीएसएम-आई (DSM-I) प्रणाली को प्रकाशित किया।

- 1968 में, एपीए ने डीएसएम-आईआई (DSM-II) प्रणाली को प्रकाशित किया, जिसमें मानसिक विकारों के वर्गीकरण में सुधार किया गया था।

- 1980 में, एपीए ने डीएसएम-आईआईआई (DSM-III) प्रणाली को प्रकाशित किया, जिसमें मानसिक विकारों के वर्गीकरण में और सुधार किया गया था।

Edit with WPS Office

- 1994 में, एपीए ने डीएसएम-आईवी (DSM-IV) प्रणाली को प्रकाशित किया, जिसमें मानसिक विकारों के वर्गीकरण में और सुधार किया गया था।

- 2013 में, एपीए ने डीएसएम-5 (DSM-5) प्रणाली को प्रकाशित किया, जिसमें मानसिक विकारों के वर्गीकरण में और सुधार किया गया था।

डीएसएम-5 में मानसिक विकारों की श्रेणियाँ

1. न्यूरोडेवलपमेंटल डिसऑर्डर: यह श्रेणी में विकासात्मक विकार शामिल हैं, जैसे कि ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर और एडीएचडी।

2. स्किज़ोफ्रेनिया स्पेक्ट्रम और अन्य साइकोटिक डिसऑर्डर: यह श्रेणी में स्किज़ोफ्रेनिया और अन्य साइकोटिक विकार शामिल हैं।

3. बाइपोलर और संबंधित डिसऑर्डर: यह श्रेणी में बाइपोलर डिसऑर्डर और अन्य संबंधित विकार शामिल हैं।

4. डिप्रेसिव डिसऑर्डर: यह श्रेणी में डिप्रेसिव विकार शामिल हैं।

5. एंग्जाइटी डिसऑर्डर: यह श्रेणी में एंग्जाइटी विकार शामिल हैं।

6. ओब्सेसिव-कंपल्सिव और संबंधित डिसऑर्डर: यह श्रेणी में ओब्सेसिव-कंपल्सिव विकार और अन्य संबंधित विकार शामिल हैं।

7. ट्रॉमा और स्ट्रेस संबंधित डिसऑर्डर: यह श्रेणी में ट्रॉमा और स्ट्रेस संबंधित विकार शामिल हैं।

8. डिसोसिएटिव डिसऑर्डर: यह श्रेणी में डिसोसिएटिव विकार शामिल हैं।

9. सोमैटिक सिम्प्टम और संबंधित डिसऑर्डर: यह श्रेणी में सोमैटिक विकार शामिल हैं।

10. फीडिंग और ईटिंग डिसऑर्डर: यह श्रेणी में फीडिंग और ईटिंग विकार शामिल हैं।

11. एलिमेंट्री और सेकेंडरी एलिमेंट्री डिसऑर्डर: यह श्रेणी में एलिमेंट्री और सेकेंडरी एलिमेंट्री विकार शामिल हैं।

12. स्लीप-वेक डिसऑर्डर: यह श्रेणी में स्लीप-वेक विकार शामिल हैं।

13. सेक्सुअल डिसफंक्शन: यह श्रेणी में सेक्सुअल डिसफंक्शन विकार शामिल हैं।

14. जेंडर डिस्फोरिया: यह श्रेणी में जेंडर डिस्फोरिया विकार शामिल हैं।

15. डिस्पैरिंग और संबंधित डिसऑर्डर: यह श्रेणी में डिस्पैरिंग और अन्य संबंधित विकार शामिल हैं।

16. सब्सटेंस से संबंधित और संबंधित डिसऑर्डर: यह श्रेणी में सब्सटेंस से संबंधित विकार और अन्य संबंधित विकार शामिल हैं।

17. न्यूरोकोग्निटिव डिसऑर्डर: यह श्रेणी में न्यूरोकोग्निटिव विकार शामिल हैं।

18. पर्सनैलिटी डिसऑर्डर: यह श्रेणी में पर्सनैलिटी विकार शामिल हैं।

Edit with WPS Office

19. पारिवारिक और संबंधित समस्याएं: यह श्रेणी में पारिवारिक और संबंधित समस्याएं शामिल हैं।

20. अन्य मानसिक विकार

भारतीय मनोविज्ञानकों ने psychopathology के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यहाँ कुछ प्रमुख योगदान दिए गए हैं:

1. आनंद कुमार: आनंद कुमार ने भारतीय संदर्भ में मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं का अध्ययन किया और उनके लिए उपचार के तरीकों का विकास किया।

2. गिरीश्वर मिश्र: गिरीश्वर मिश्र ने भारतीय संदर्भ में मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं का अध्ययन किया और उनके लिए उपचार के तरीकों का विकास किया।

3. दिनेश भार्गव: दिनेश भार्गव ने भारतीय संदर्भ में मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं का अध्ययन किया और उनके लिए उपचार के तरीकों का विकास किया।

4. एन.एन. विद्यासागर: एन.एन. विद्यासागर ने भारतीय संदर्भ में मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं का अध्ययन किया और उनके लिए उपचार के तरीकों का विकास किया।

5. एस.एस. जैन: एस.एस. जैन ने भारतीय संदर्भ में मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं का अध्ययन किया और उनके लिए उपचार के तरीकों का विकास किया।

इन मनोविज्ञानकों ने भारतीय संदर्भ में मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं का अध्ययन करने और उनके लिए उपचार के तरीकों का विकास करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

इसके अलावा, भारतीय मनोविज्ञानकों ने निम्नलिखित क्षेत्रों में भी योगदान दिया है:

1. मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं का अध्ययन: भारतीय मनोविज्ञानकों ने मानसिक स्वास्थ्य की समस्याओं का अध्ययन किया है, जैसे कि अवसाद, चिंता, और व्यक्तित्व विकार।

2. उपचार के तरीकों का विकास: भारतीय मनोविज्ञानकों ने उपचार के तरीकों का विकास किया है, जैसे कि संज्ञानात्मक-व्यवहार थेरेपी और मनोविश्लेषण।

3. मानसिक स्वास्थ्य की जागरूकता में वृद्धि: भारतीय मनोविज्ञानकों ने मानसिक स्वास्थ्य की जागरूकता में वृद्धि करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

इन योगदानों के माध्यम से, भारतीय मनोविज्ञानकों ने मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति की है।

Edit with WPS Office

Edit with WPS Office